ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-11*December- 2021
Innovation The Research Concept

औद्योगिक श्रमिकों की सामाजिक, आर्थिक स्थिति: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

The Socio-Economic Status of Industrial Workers: A Sociological Analysis

Paper Submission: 12/12/2021, Date of Acceptance: 23/12/2021, Date of Publication: 24/12/2021

कविता कन्नौजिया
एसोसिएट प्रोफेसर
समाजशास्त्र विभाग
किशोरी रमण महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
मथुरा, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

प्रस्तुत शोध 'औद्योगिक श्रमिकों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति (वाराणसी के डी.एल.डब्ल्यू रेल कारखाना के संदर्भ में) प्रस्तुत अध्ययन (शोध) उत्तर प्रदेश के वाराणसी जिले के डी. एल. डब्ल्यू रेल कारखाना में कार्यरत श्रमिक समग्र में से 300 श्रमिकों (उत्तरदाताओं) का चयन किया गया है। तथ्यों (डाटा) या आकडों को साक्षातकार अनुसूची प्रविधि के माध्यम से सर्वेक्षण करके प्राप्त किया गया है। श्रमिक, श्रमिक होने से पहले समाज का सदस्य है। उसका सम्पूर्ण जीवन सामाजिक व्यवस्थाओं व आर्थिक स्थितियों से नियंत्रित व निर्देशित होता है। प्रत्येक युग में श्रमिकों की सामाजिक आर्थिक स्थिति के बारे में जब भी विद्वानों ने चिन्तन व अवलोकन किया तो पाया कि उनकी स्थिति सदैव से पिछड़ा रहा है। विभिन्न परिवेश में श्रमिक उत्पादन कार्य करता है। वर्तमान में यह देखा जा रहा है कि विकासशील समाज में औद्योगिक श्रमिक बिना समस्या या कठिनाई का अनुभव किये बिना अपने आपको औद्योगिक कार्यों के साथ समायोजित कर रहे हैं। क्योंकि सरकारी नौकरी वर्तमान में अन्य कार्यों की अपेक्षा सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना जा रहा है। जब श्रम - उत्पादन का एक पृथक साधन बन जाता है तब अनेक समस्याऐ उत्पन्न होने लगती है। समस्याओं का केवल आर्थिक पक्ष नहीं हेाता, उनका सम्बन्ध मनोवैज्ञानिक, नैतिक सामाजिक तथा वैधानिक पहलुओं से भी होता है। अतः श्रम सम्बधी समस्याएं 'काम करने' (उद्योग) और रहने वाले वातावरणों (समाज) के साथ अनुकूलन प्राप्त करने की प्रक्रिया में व्यक्ति और समूह के संघर्षों में तनाव एवं प्रतियोगिता से उत्पन्न होती है। श्रम के अधिकारों एवं विशेषाधिकारों को श्रम अधिनियम द्वारा ही सुरक्षा मिल पा रही जो केवल संगठित क्षेत्र के उद्योगों में ही श्रमिक अपने को समस्यामुक्त व सुरक्षित महसूस कर पा रहे हैं।

Presented research 'Socio-economic status of industrial workers (D.L.W Rail of Varanasi' With reference to the factory) the present study (research) was done by D.L. of Varanasi district of Uttar Pradesh. 300 workers (respondents) have been selected out of the total labor employed in keeping W rails. The facts (data) or data have been obtained by surveying through interview schedule method.A worker is a member of the society before being a worker. His whole life is controlled and fed by social systems and economic conditions. Whenever the scholars thought and observed about the socio-economic condition of the workers in each era, they found that their condition has always been backward. Workers do production work in different environments. It is currently being viewedThat industrial workers in a developing society are adjusting themselves to industrial work without experiencing any problems or difficulties. Because government job is currently considered most important than other jobs. When labor becomes a separate means of production, many problems arise. Problems do not only have an economic side, they are also related to psychological, moral, social and legal aspects.Labor problems, therefore, arise from tensions and competition in individual and group conflicts in the process of achieving adaptation with the 'working' (industry) and living environments (society). The rights and privileges of labor are getting protection only by the Labor Act, which only workers in organized sector industries are able to feel themselves problem-free and safe.

मुख्यशब्द: औद्यौगिक, श्रमिक, श्रम-समस्याएं, श्रम-शक्ति।
Keywords: Industrial, labor, labor-problems, labor-power.

प्रस्तावना

आधुनिक युग को औद्योगिक युग के प्रतीक के रूप में देखा जा रहा है, विश्व के सभी राष्ट्र औद्योगिक विकास में एक दूसरे से आगे बढ़ने के लिए प्रयत्नशील है। आज विष्व का वही राष्ट्रअग्रणी माना जा रहा है जो औद्योगिक रूप से सुदृढ़ और सुसंगठित है। औद्योगिक श्रम से हमारा तात्पर्य उन सभी श्रामिकों से है जो बडे पैमाने व संगठित क्षेत्र के उद्योगों में काम करते हैं किन्तु भारत में इस पद का प्रयोग सीमित रूप में किया जाता है। इस आधार पर उन सभी श्रमिकों को जिन पर व्यवस्थित काराखानों में फैक्ट्री अधिनियम लागू होता है औद्योगिक श्रम का अंग मान लिया जाता है। भारत अपने जनषक्ति एवं प्राकृतिक सम्पदा के कारण एक बडा औद्योगिक राष्ट्र माना जा रहा है। यहाँ पर अनेक ऐसे अध्ययन हुए

हैं जो भारतीय औद्योगिक श्रमिकों की छाया (प्रतिविम्ब) को प्रस्तुत करते हुए स्पष्ट किया है कि भारतीय व्यक्तित्व में अन्तर्निहित कमजोरियों पर जोर दिया है तो कुछ ने औद्योगिक कार्यो में दायित्वपूर्ण भूमिका निभाने की बात की है। कोटा में वैध पूना में लैम्बर्ट बम्बई में शर्मा के अध्ययन का यह निष्कर्ष है कि आधुनिक औद्योगिक मजदूर औद्योगिक कार्यों के प्रति उत्तरदायी है। डी. नारायण का विचार है कि धार्मिक और परम्परागत मूल्यों का मजदूरों के मनोवृत्ति पर इतना गहरा प्रभाव होता है कि उद्योगवाद का तर्क उनके मन में जड़ नहीं बना पाती। भारतीय औद्योगिक श्रमिको को प्रायः आलसी और अकुषल कहा जाता है किन्तु बम्बई वस्त्र अद्योग श्रमिक जँाच समिति के अनुसार " सभी व्यवसायों में केवल उन्हीं लोगों से कुषलता के एक ऊँचे स्तर की आशा रखा जा सकता है जो शारीरिक दृष्टि से उपयुक्त एवं मानसिक चिन्ताओं से मुक्त हों, अर्थात केवल उन लोगों से जो उचित रूप से प्रशिक्षित हों, उचित आवास में रहते हों, उचित भोजन करते हों एवं उचित वस्त्र पहनते हों।

श्रम शक्ति का महत्व का 'साधन' और 'साध्य' दोनों रूपों में है। समस्त उत्पादन का मूल साधन श्रमिक है, वही अपनी शारीरिक व बौद्रिक शक्ति तथा भौतिक साधनों का प्रयोग करके नयी रीतियों व प्रक्रिया को जन्म देता है और आर्थिक विकास के लिए मार्ग प्रषस्त करता है। यदि किसी देष का प्राकृतिक साधन अत्यन्त पर्याप्त हो तो भी वह देश गरीब ही रह सकता है यदि उसकी श्रम-शक्ति पर्याप्त व कुषल न हो। उत्पादन के साधन के रूप में श्रम का अत्यधिक महत्व है और दूसरे साधनों का उपयोग श्रमिकों की शक्ति और समय के उचित उपयोग पर बहुत कुछ निर्भर करता है वास्तव में श्रमिक मानव होने के नाते जिम्मेदारी उठा सकते हैं, सहयोग कर सकते है। उनकी अपनी भावनाए आकांक्षाएं है। यदि उनका उचित सम्मान किया जाये तो औद्योगिक या अन्य कार्यों में सफलता प्राप्त हो सकत है। 'श्रम' अब अश्रानीव अनभिज्ञ कामगारों का असंगठित समूह नहीं रहा उसकी चेतना व शक्ति में वृद्वि हुई है।

श्रमिक, समाज का महत्वपूर्ण एवं मुख्य अंग है लगातार श्रमिकों का महत्व बढता जा रहा है। औद्योगिकरण की प्रक्रिया, औद्योगिक श्रमिकों की सामाजिक आर्थिक स्थिति में परिवर्तन कर उनके जीवन के विभिन्न क्षेत्रों को प्रभावित किया है। मशीनीकरण तथा उससे सम्बन्धित कारखाना प्रणाली न केवल उत्पादन व्यवस्था में ही परिवर्तन लाया है बल्कि श्रमिकों के कार्य करने के ढ़गों में भी परिवर्तन लाया है। अब परम्परागत सांस्कृतिक कारक उसके दायित्व की प्रक्रिया में बाधा डालने के लिए एक मजबूत चर के रूप में कार्य नहीं करता। श्रम उत्पादन का एक सजीव साधन है उसका सम्बन्ध मानव से है अतः उसमें मानवीय सुख-दुख और नैतिक तत्वों का समावेश स्वाभाविक है। जव तक श्रमिक या मजदूर उत्पादन यंत्रों के स्वयं ही मालिक थे तब तक अन्य किसी दूसरे वर्ग द्वारा उनके शोषण की सम्भावना और समाज के संरक्षण की जरूरत नहीं थी। औद्योगिक क्रान्ति से उत्पादन के साधन उनके हाथ से निकल गए उन्हें दूसरे मालिकों के नीचे अपने घरों से दूर अस्वच्छ और अस्वस्थ वातावरण में रहने पर मजबूर किया इसी कारण श्रम कल्याण व सुरक्षा का जन्म हुआ।भारतीय श्रम अपेक्षाकृत कम संगठित है तथा दूसरी ओर मँाग व पूर्ति में भारी अन्तर होने के कारण वह एक शोषित वर्ग बन गया था लेकिन अब भारतीय श्रमिक अपने अधिकारों के प्रति काफी जागरूक है। श्रमिक संगठनों का महत्व समझने लगा है। आज के श्रमिक को वह सम्मान प्राप्त है जो पहले के श्रमिकों को नही मिला था। अब वे मजदूर नही रहे जो समाज द्वारा उपोक्षित अपने अस्तित्व को कायम रखने के लिए सीमित आकांक्षाएं रखता हो, अब श्रमिकों को अनेकानेक सुरक्षा मिल रहा है एक बार काम प्रवेष करने पर रोजगार सुरक्षित है उसे अन्यायपूर्वक काम से अलग नहीं किया जा सकता तथा उसे छटनी और बैठकों के विरूद्व कानूनी सुरक्षा दी गई है। इसके बावजूद वह अपने आश्रितों के भविष्य के लिए चिन्तित रहते है क्योंकि देश में रोजगार की समस्या कठिन है। विसेण्ट एण्ट मायर्स ने अपनी पुस्तक -"न्यू फाउण्डेशन ऑफ इण्डस्ट्रियल सोषियोलॉजी में तथा एडवर्ड एल.बनैज ने अपनी -" पब्लिक रिलेशन" एक मिल मालिक का उदाहरण देते हुए स्पष्ट किया है कि मिलमालिक मषीन व श्रमिक दोनों को खरीदी हुई वस्तु समझकर समान रूप से देखता है। जिस प्रकार जीर्ण और अनुपयोगी होने पर एक श्रमिक को निकाल कर उसके स्थान पर दूसरे श्रमिक को रख लेता है। इस दूर्दान्त परिणामों ने सामाजिक विचारकों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया, एक नई विचार धारा का विकास हुआ विरसन व एलीनेशम की है।

1. श्रम, श्रमिक से बाहर की वस्तु हो जाता है इसका प्रवाह श्रमिक की अन्तरात्मा से नहीं होता बरन उससे विवश होकर अपनी रोटी के लिए श्रम करना पडता है।
2. मजदूर द्वारा निर्मित वस्तु उससे अलग कर ली जाती है और उसका उससे कोई सम्बन्ध नहीं रह जाता। कम्युनिष्ट मेनीफेस्टो (घोषणा-पत्र) ने मार्क्स और एजिकने मशीन के बारे में इस प्रकार लिखा -"मशीन के अत्यधिक प्रयोग एवं श्रम विभाजन के कारण सर्वहारा के कामों में व्यक्तिगत विशेषताएं तिरोहित हो गई। इस प्रकार श्रमिक का सभी आनन्द भी समाप्त हो गया। श्रमिक, मषीन का एक खिलौना मात्र रह गया।
3. उपर्युक्त विचारधारा ने आगे चलकर जहँ सामाजिक क्रान्ति और साम्यवाद के अभ्युदय में योगदान दिया वही पश्चात् देखों के पूंजीपतियों ने इस विचार धारा के भविष्यगत परिणामों का भी अनुमान कर औद्योगिक प्रतिष्ठानों में मानवीय तत्वों के किन्चित अनुरक्षण और विकास का कार्य आरम्भ किया ताकि श्रमिकों की कुठाओं का कुछ अंष तक तिरोधान हो, और वे श्रम कल्याण सम्बन्धि प्रयासों में संतोष और सुख का अनुभव करते हुए उत्पादन में वृद्वि करें। इस सम्बन्ध में सबसे उल्लेखनीय प्रयास

फ्रेडरिक टेलर का प्रबन्ध प्रणाली है। टेलर का ध्यान श्रमिकों पर केन्द्रित न होकर उत्पादकता की ओर आकृष्ट था। उनका विचार था, कि सर्वाधिक कुशल प्रबन्ध उच्च मजदूरी और न्यून लागत है। इसमें टाइम स्टडी मेथड से कार्य करने पर जोर दिया । अधिक मजदूरी के लिए अधिक कार्य करते हुए लागत को कम करेगा। टेलर के विचार से अच्छे श्रमिक को उसकी सामान्य मजदूरी की अपेक्षा 30 प्रतिशत से 100 प्रतिशत अधिक मजदूरी दी जा सकती है। फोर्ड ने दृष्तापूर्वक यह कहा है कि प्रबन्ध का यह संदेष होना चाहिए कि वह मजदूर से अधिकतम काम लें और अधिकतम सुख सविधा दें।

औद्योगिक प्रतिष्ठानों में मनोवैज्ञानिकों के प्रवेष से मानवीय तत्वों के महत्व की स्थापना हुई। बीसवीं शताब्दी के द्वितीय दशक में औद्योगिक मनोविज्ञान सम्बन्धि अन्वेषणाओं को प्रोत्साहन देने के लिए राजकीय स्तर पर औद्योगिक मनोविज्ञान संस्थान तथा औद्योगिक स्वास्थ्य गवेषणा केन्द्रों की स्थापना की गई। उन्होंने कार्य के घण्टे, प्रकाश, थकान तथा, नीरसता आदि समस्याओं पर अनेक शोध कार्य किये। सी.एस. मायर्स ने लिखा है कि -" औद्योगिक मनोविज्ञान का उद्देश्य अधिकाधिक उत्पादन नहीं वरन श्रमिकों को अत्याधिक सुख प्रदान करना है। सुख से अर्थ केवल शारीरिक सुख से ही नहीं वरन मानसिक सुख से भी है। वेस्टर्न इलेक्टि प्लांट में हाथर्न में कई शोध कार्य हुए जिनके निष्कर्ष निकले, उनसे औद्योगिक सामाजिक मनोविज्ञान की स्थापना हुई जिसे हयूमन रिलेषन स्कूल की संज्ञा दी गइ। इसके निष्कर्ष के अनुसार - कार्य एक सामूहिक प्रक्रिया है जो कार्यगत व्यवहार और सामूहिक मूल्यों द्वारा प्रभावित होता है। भौतिक दशाए और आर्थिक प्रेरणांए स्वमेय ही प्रभावशाली नही होती है, बल्कि ये तभी प्रभावषाली हो सकती है जब वे कामगारों के आन्तरिक और वाहय जीवन के सामाजिक व मनोवैज्ञानिक तत्वों के साथ समायोजित हों। औद्योगिक संरचना में अनेक प्रकार से सम्बन्ध जुडे रहते हैं यह सम्बन्ध कुछ प्रतीकों के साथ, औद्योगिक प्रतिष्ठान के सामाजिक संगठन का निर्माण करते हैं।

मानव आवष्यकताओं का क्षेत्र अत्यधिक विस्तृत होता है इसकी संतुष्टि के लिए अनेक प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पडता है। व्यक्ति इन कठिनाइयों से संघर्षरत है और अपनी प्रगति का अवसर ढुढता है। व्यक्ति न्यूनतम कार्य करते हुए अधिकतम लाभ ढुंढता है। वह आर्थिक लाभ के साथ-साथ सामाजिक उत्कर्ष भी आवश्यक समझता है। कार्य संतुष्टि श्रमिकों के उन सभी विचारों एवं अभिवृत्तियों का परिणाम है जो वह कार्य के प्रति, कार्य से सम्बन्धित विभिन्न कारकों के प्रति, सम्पूर्ण समाज के प्रति रखता है। श्रमिक एक सामाजिक प्राणी भी है जिसके नाते वह केवल कार्यस्थल पर ही संतुष्टि नही चाहता, बल्कि अपने सामाजिक जीवन की भी सन्तुष्टि चाहता है।

अध्ययन क्षेत्र

वर्तमान समय में कई प्रमुख उद्योग स्थापित है जिसमें डीजल रेल इंजन कारखाना वाराणसी वृहद (संगठित क्षेत्र का) औद्योगिक प्रतिष्ठान है। जिसकी स्थापना 1961 में मेंसर्स एस्लो प्रोडक्टस इन कारपोरेषन अमेरिका के सहयोग से हआ। सभी क्षेत्रिय रेलों के लिए डीजल रेल इंजनों हेतु अतिरिक्त पुर्जों का आयात एवं पर्याप्त मात्रा में निर्यात किया जाता है। जूलाई 1985 से दुर्घटनाओं में क्षतिग्रसत रेलइंजनों में जीर्णी द्वार का नया कार्य भी शुरू किया गया है। इस कारखाने से उत्पादित रेल इंजन दुनिया के कई देशो जैसे तंजानिया, वियतनाम, बांगलादेश तथा श्रीलंका रेलवे को निर्यात किया जाता है

उद्देश्य

1. श्रमिकों का कार्य संतुष्टि के बार में जानकारी प्राप्त करना।
2. आय व ऋणग्रस्ता के बारे में जानकारी हासिल करना।
3. वेतन संतुष्टि के बारे में जानकारी प्राप्त करना।
4. कारखाने में उपलब्ध सुविधाओं का पता लगाना।
5. श्रमिकों एवं मलिकों के सम्बन्धों के बारे में जानकारी करना।
6. जातिगत सम्बन्धी व्यवहारों का पता लगाना।

उपकल्पनाएं

1. एकाकी परिवार में रहने वाले श्रमिक संयुक्त के अपेक्षा कम ऋणग्रहत होते।
2. संगठित क्षेत्र के उद्योगों के भौतिक दषाओं में सुधार।
3. श्रमिकों के प्रति मालिकों का व्यवहार उपेक्षित होता है।
4. उच्च सा0 आर्थिक स्थिति वाले श्रमिक ऋण लेने के पक्ष में नहीं होते।

श्रम से सम्बन्धित समस्याएं औद्योगिक प्रगति के साथ-साथ बढ़ती जाती है। इन समस्याओं के आर्थिक प्रभावों के साथ-साथ सामाजिक प्रभाव भी होते हैं। श्रमिकों का कल्याण अद्योग और समाज दोनों के लिए ही महत्वपूर्ण है। मजदूरी, औद्योगिक शान्ति, हड़ताल, तालाबन्दी आवास, स्वास्थ्य एवं श्रम कुषलता, बेकारी आदि की समस्याए अध्ययन कर्ता के अध्ययन का विषय बन जाता है। मजदूरी का प्रश्न न केवल उत्पादन के किसी साधान के मूल्य को निर्धारित करता बाल्के प्रचलित जीवन-स्तर का विचार भी इससे जूडा है। कार्य संतुष्टि व स्वास्थ्य श्रमिक प्रबन्ध सम्बन्ध केवल मजदूरी एवं कार्यस्थल के भौतिक वातावरण पर ही निर्भर नहीं होते वरन अन्य बातों पर भी निर्भर होते हैं। श्रमिक अपने कार्य में विविधता चाहता है। वह आर्थिक सुरक्षा, आदर एवं अपनी उन्नति के लिए अवसर प्राप्त करने की इच्छा रखता है।

ए0एम0 एडवर्ड के विचारों से स्पष्ट होता है कि- "लोगों का व्यवसाय उनके जीवन उनकी प्रथाओं उनकी तथा उनके सदस्यों सस्थाओं को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है।"

सारणी संख्या -1.01

उत्तरदाताओं के नौकरी (कार्य) संतुष्टि का विवरण

विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	252	84-00
नहीं	48	16-00
योग	300	100-00

आकडों से ज्ञात होता है कि सर्वाधिक 84.00 प्रतिशत उत्तरदाता (श्रमिक) इस उद्योग में नौकरी (कार्य) से संतुष्ट है केवल 16.00 प्रतिशत अपने नौकरी (कार्य) से संतुष्ट नही है।

सारणी संख्या -1.02

पारिवारिक स्वरूप के सापेक्ष वर्तमान नौकरी के प्रति संतुष्टि का विवरण

परिवार का स्वरूप	वर्तमान नौकरी के प्रति संतुष्टि		योग
संयुक्त	145 ¼80-56½	35 ¼19-44½	180 ¼100-00½
एकाकी	107 ¼89-17½	13 ¼10-83½	120 ¼100-00½
योग	252 ¼84-00½	48 ¼16-00½	300 ¼100-00½

सारिणी संख्या 1.01 से ज्ञात हुआ है कि संयुक्त परिवार में रहने वाले सर्वाधिक 80.56 प्रतिशत उत्तर दाता कार्य (नौकरी) के प्रति संतुष्टि व्यक्त किया है। केवल 19.44 प्रतिशत उत्तरदाता असंतुष्टि व्यक्त किया है। वही 89.17 प्रतिशत एकाकी परिवार में रहने वाले उत्तरदाता वर्तमान नौकरी (कार्य से) से संतुष्ट है केवल 10.83 प्रतिशत असंतुष्टि व्यक्त किये हैं। अर्थात अध्ययन से स्पष्ट होता है कि संयुक्त परिवार के एवं एकाकी परिवार के श्रमिक उस कारखाने के नौकरी से संतुष्ट हैं।

सारणी संख्या -1.03

सामाजिक आर्थिक स्थिति के सापेक्ष वर्तमान नौकरी के प्रति संतुष्टि का विवरण

सा0 आर्थिक स्थिति	**वर्तमान नौकरी के प्रति संतुष्टि**		**योग**
उच्च वर्ग	45 ¼66-18½	23 ¼33-82½	68 ¼100-00½
मध्यम वर्ग	111 ¼88-10½	15 ¼11-90½	126 ¼100-00½
निम्नवर्ग	96 ¼90-57½	10 ¼9-43½	106 ¼100-00½
योग	252 ¼84-00½	48 ¼16-00½	300 ¼100-00½

सरिणी संख्या 103 के संमको से ज्ञात होता है कि उच्च सा0 आर्थिक स्थिति प्राप्त उत्तरदाताओं में 66.18 प्रतिशत वर्तमान नौकरी से संतुष्ट है। 33.82 प्रतिशत ने असंतुष्टि व्यक्त की है। मध्यम वर्ग के 88.10 प्रतिशत उत्तरदाता नौकरी से संतुष्ट है केवल 11.90 प्रतिशत ने असंतुष्ट है निम्न वर्ग के 90.57 प्रतिशत उत्तरदाता नौकरी से संतुष्ट है केवल 9.43 प्रतिशत असंतुष्टि व्यक्त की है।

सारणी संख्या 1.04

श्रमिकों की नौकरी में नियुक्ति के आधार का विवरण

नियुक्ति का आधार	आवृत्ति	प्रतिशत
योग्यता व क्षमता	243	81-00

राजनीतिक पहुँच	12	4-00
बाहुबल	0	00-00
मध्यस्थों द्वारा	45	15-00
अन्य	0	00-00
योग	300	100-00

सारिणी संख्या 1.04 के आकडों के विष्लेषण से ज्ञात होता है कि सर्वाधिक 81.00 प्रतिशत श्रमिकों की नियुक्ति विधिवत (योग्यता व क्षमता) के आधार पर हुआ है। केवल 15.00 प्रतिशत श्रमिकों की नियुक्ति मध्यस्थों के पहल से हुई हैं जबकि केवल 4.00 प्रतिशत श्रमिकों की नियुक्ति में राजनीतिज्ञों की पहुँच का भी दबाव रहा। विष्लेषण से स्पष्ट होता है कारखाने में नियुक्ति योग्यता व क्षमता के आधार पर होती है।

सारिणी संख्या - 1.05
श्रमिकों के निवास सम्बन्धी विवरण

स्थानीय निवास	आवृत्ति	प्रतिशत
फैक्ट्री लेबर कालोनी	200	66-6
राजकीय लेवर कालोनी	75	25-00
निजी आवास	25	8-39
योग	300	100-00

सारिणी संख्या 1.05 के आकडों से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक 66.67 प्रतिशत श्रमिक फैक्ट्री लेबर कालोनी में रहते हैं। 25.00 प्रतिशत राजकीय लेबर कालोनी में तथा केवल 8.39 प्रतिशत श्रमिक निजी आवास में रहते हैं। श्रमिकों के बातचीत से पता चला कि जो वाराणसी सीटी के श्रमिक है वे अपने निजी आवास में रहते हैं। कारखाना द्वारा उपलब्ध आवास की व्यवस्था अच्छी होने के नाते श्रमिक उसी में रहना चाहते हैं।

सारिणी संख्या 1.06
उत्तरदाताओं के जातिगत भेद-भाव

जातिगत भेद भाव	आवृत्ति	प्रतिशत
नहीं	191	63-67
हाँ	109	36-33
योग	300	100-00

सारिणी संख्या 1.06 के आकडों से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक 63.67 प्रतिशत उत्तरदाताओ का विचार है कि प्रतिष्ठान में जातिगत भेद-भाव का व्यवहार नहीं होता हैं। जबकि 36.33 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने यह स्वीकार किया है कि जातिगत भेद-भाव का व्यवहार होता है।

सारिणी संख्या 1.07
उत्तरदाताओं का सेवायोजकों के साथ सम्बन्धों का विवरण

सम्बन्ध	आवृत्ति	प्रतिशत
सहयोगात्मक	253	84-33
असहयोगात्मक	47	15-67
योग	300	100-00

सारिणी संख्या 1.07 के आकडों से ज्ञात होता है कि उत्तरदाताओं का सेवायोजकों के साथ सम्बन्धों को देखा जाये तो स्पष्ट हो रहा है कि सर्वाधिक 84.33 प्रतिशत उत्तरदाताओं का अपने सेवायोजकों के साथ सहयोगात्मक मधुर सम्बन्ध है केवल 15.67 प्रतिशत श्रमिकों ने स्वीकार किया कि उनका मालिकों के साथ असहायोगात्मक सम्बन्ध हैं। इस प्रकार हमारी उल्पकल्पना श्रमिकों के उपेक्षीत होता है सही नहीं है। संगठित क्षेत्र में मालिको का श्रमिकों के साथ सहयोगात्मक सम्बन्ध होता है।

सारिणी संख्या-1.08

उत्तरदाताओं के ऋणग्रस्तता का विवरण

उत्तर	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	57	19-00
नहीं	243	81-00
योग	300	100-00

सरिणी के विष्लेषण से ज्ञात होता है कि सर्वाधिक 81.00 प्रतिशत श्रमिक ऋणग्रस्त नहीं है। मात्र 19.00 प्रतिशत श्रमिक ऋणग्रस्त है।

सारिणी संख्या-1.09

श्रमिकों द्वारा विवाह/मुण्डन/बर्थडे पार्टी के लिए लिये जाने वाले ऋण का विवरण

उत्तर	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	108	36-00
नहीं	192	64-00
योग	300	100-00

सारिणी संख्या 1.08 के आकडों के अवलोकन से ज्ञात होता है कि सर्वाधिक 64.00 प्रतिशत श्रमिक विवाह, मुण्डन व बर्थडे पार्टी के लिए ऋण नहीं लेते परन्तु 36.00 प्रतिशत श्रमिक ऋण लेते हैं। अतः स्पष्ट है कि सर्वाधिक श्रमिक ऋणग्रस्त नहीं है।

सारिणी संख्या-.1.1

परिवार के स्परूप के सापेक्ष ऋण लेने की स्थिति का विवरण

परिवार का स्वरूप योग	ऋण लेने की स्थिति		योग
	हाँ	नहीं	
संयुक्त	83 (46-11)	97 (53-89)	180(100-00)
एकाकी	25 (20-1o)	95(79-16)	120 (100-00)
योग	108 (36-00)	192 (64-00)	300 (100-00)

सारिणी में परिवार के स्वरूप के सापेक्ष ऋण लेने की स्थिति सम्बन्धित आकडों से ज्ञात होता है कि संयुक्त परिवार के 53.89 प्रतिशत श्रमिक ऋण नहीं लेते लेकिन 46.11 प्रतिशत श्रमिक ऋण लेते हैं। एकाकी परिवार के सर्वाधिक 79.16 प्रतिशत उत्तरदाता ऋण नहीं लेते हैं, जबकि 20.10 प्रतिशत उत्तरदाता ऋण लेते हैं अर्थात एकाकी परिवार में रहने वाला श्रमिक संयुक्त परिवार में रहने वाले श्रमिक की अपेक्षा ऋण कम लेता है। अतः हमारी उपकल्पना संख्या -1 सत्य प्रमाणित होती है।

सारिणी संख्या-.1.11

सामाजिक आर्थिक स्थिति के सापेक्ष ऋण लेने की स्थिति

सामाजिक आर्थिक स्थिति	ऋण लेने की स्थिति		योग
	हाँ	नहीं	

उच्च वर्ग	05 (7-35)	63 (92-65)	68(100-00)
मध्यम वर्ग	16 (2-70)	110 (87-30)	126 (100-00)
निम्न वर्ग	87 (85-08)	19 (17-92)	106 (100-00)

सारिणी विश्लेषण स्पष्ट पता चल रहा है कि उच्च सामाजिक आर्थिक स्थिति वाले 92.65 प्रतिशत उत्तरदाता ऋण नहीं लेते, केवल 7.35 प्रतिशत ही लेते हैं। सर्वाधिक 85.08 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी सामाजिक आर्थिक स्थिति निम्न है वही ऋण लेते हैं। अतः हमारी उपकल्पना संख्या (04) सत्य सावित हो रही है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन में श्रमिकों की सा0 आर्थिक दषा का अध्ययन हेतु एकत्रित किये गए आंकडों से ज्ञात होता है कि डीजल रेल इंजन कारखाने में काम करने वाले सर्वाधिक 84.00 प्रतिशत श्रमिक नौकरी से संतुष्ट हैं। सर्वाधिक 81 प्रतिशत उत्तर दाता ऋणग्रस्त नही हैं। केवल 19ः00 प्रतिशत ही उत्तरदाता ऋणग्रस्त हैं। जो विवाह मुण्डन पार्टी के लिए केवल 36.00 प्रतिशत श्रमिक ऋण लेते हैं। आय के सापेक्ष ऋण लेने वाले श्रमिकों में कम आय प्राप्त करने वाले श्रमिक ऋणलेते है संयुक्त परिवार की अपेक्षा एकाकी परिवार में रहने वाले श्रमिक कम ऋणलेते है। अर्थात उच्च सामाजिक आर्थिक स्थिति वाले श्रमिक ऋण लेने के पक्ष में नहीं रहते हैं। उत्तरदाताओं का सेवायोजकों (मालिकों) के साथ सम्बन्धों के विष्लेषण से स्पष्ट है कि सर्वाधिक 84.33 प्रतिशत उत्तरदाता का अपने मालिकों के साथ मधुर सम्बन्ध है। प्रबन्धक श्रमिकों की समस्याओं पर ध्यान देते हैं। श्रमिकों के प्रति अधिकारियों का दृष्टिकोण अपेक्षित हैं डीजल रेल रंजन कारखाने में कर्मचारियों को मिलने वाली सुविधाओं में बाल, उद्यान, महिलाओं के लिए महिला संगठन जिसमें सिलाई कढ़ाई, पेंटिग स्कूल, छात्रवृत्ति, बाल पुस्तकालय, एवं विकलांग के लिए शिक्षा, बाल मेला की व्यवस्था, बाजार की व्यवस्था, डाकघर एंव बैंक शखाए भी परिसर में मौजूद हैं।

संदर्भ सूची

1. *के.एन.वैद - "दी न्यू वर्कर 'ए स्टडी एट कोटा" एशिया द्या0लेशिग हाउस बाम्बे,1968।*
2. *आर.डी.आई. - लैम्बर्ट - "वर्कर्स फैक्ट्रीस एण्ड सोषल चेन्ज इन इण्डिया" मिन्सटोन न्यू वर्साय, प्रिनसेटोन यूनिवर्सिटी प्रेस, 1963 पृष्ठ -17*
3. *डी0 नारायणः' "हिन्दू करैक्टर" युनिवर्सिटी आफ बाम्बे पापुलर प्रकाषन, बाम्बे, 1957 पृष्ठ -178।*
4. *रिपार्ट आफ दी बाम्बे टेक्सटाइल लेबर इनक्वायरी समिति पृ0 - 264*
5. *शर्मा आर0पी0 (औद्योगिक समाज विज्ञान) रिसर्च, दिल्ली 1989. पृ0 सं0 45*
6. *स्ा्ी0मायर्स - "लेबर प्रावलम्स इन इण्डस्ट्रीलाइजेशन आफ इण्डिया, हारवर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस कैम्ब्रीज, 1958 पृष्ठ66*
7. *खरे,पी.सी. एवं सिन्हा, बी.सी. (1991) " औद्योगिक समाज- विज्ञान", साँतवा संस्करण पृष्ठ11-30 भाग-2*
8. *लल एस.एन. व्यष्टि अर्थशास्त्र ज्ञान ला एजेन्सी इलाहाबाद, 1995,।*